छपरा ज़िले में बिहार शिक्षा परियोजना के अंतर्गत बालिका शिक्षा की स्थिति
(Status of Girls Elementary Education under Bihar Shiksha Project)

एम॰फिल॰ स्त्री अध्ययन उपाधि हेतु प्रस्तुत

लघु शोध-प्रबंध

सत्र: 2015-16

शोध-निर्देशिका

डॉ. सुप्रिया पाठक

विभागाध्यक्ष

शोधार्थी

अलका

पंजीयन संख्या: 2015/03/212/014

स्त्री अध्ययन विभाग

संस्कृति विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

पोस्ट : हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा- 442005 (महाराष्ट्र) भारत

शोध सारांश

प्रस्तुत शोध छपरा ज़िले में बिहार शिक्षा परियोजना के अंतर्गत बालिका शिक्षा की स्थिति का अध्ययन करना है। इस विषय में छपरा ज़िले में सर्व शिक्षा अभियान के अंतर्गत बिहार शिक्षा परियोजना में बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा और उनकी स्थिति के बारे में जानने का प्रयास किया गया है। क्योंकि यह विषय मुखतः बिहार शिक्षा परियोजना के NPEGEL (National Programme Of Education For Girls at Elementary Level) योजना से संबंधित है। इसलिए इस योजना के तहत बालिकाओं की शिक्षा में विकास का स्तर क्या है? इसको भी देखने का प्रयास किया गया है।

शोध विषय से संबंधित प्रश्न हैं:- बिहार शिक्षा परियोजना के अंतर्गत बालिका शिक्षा की स्थिति क्या है?, प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं का नामांकन दर (Enrollment rate) क्या हैं?, प्राथमिक विद्यालयों में बालिकाओं की घटती हुई उपस्थिति(Dropout rate)का कारणों का पता लगाना?, NPEGEL पारियोजना का मूल्यांकन करना।

शोध विषय से संबंधित निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए छपरा ज़िले में बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा में आने वाली समस्याओं को पता लगाने का प्रयास किया गया है। मुख्य शोध उद्देश्य हैं:-बालिकाओं के नामांकन दर का अध्ययन करना। विद्यालयों में बालिकाओं की घटती हुई उपस्थिति के कारणों का विश्लेषण करना। बिहार शिक्षा परियोजना का सामाजिक और जातिगत आधार पर विश्लेषण करना। बिहार शिक्षा परियोजना का मूल्यांकन करना। तथा बिहार शिक्षा परियोजना के अंतर्गत बालिकाओं की प्राथमिक शिक्षा में स्थिति का अध्ययन करना है।

भारत के विभिन्न राज्यों के साक्षारता दर की तुलना की जाए तो यह ज्ञात होगा की बिहार का स्थान शिक्षा में सबसे पीछे है। ऐसे कौन से कारण हैं जिनकी वजह से बिहार की शैक्षणिक स्थिति इतनी कमजोर है। राज्य सरकार द्वारा बालिकाओं की शिक्षा में सुधार के लिए कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, महिला सामख्या, औपरेशन ब्लैक बोर्ड जैसे कई योजनाओं की शुरुआत की गयी है। इन सभी योजनाओं के आरंभ के बाद भी बिहार में बालिकाओं की शिक्षा की स्थिति में कुछ खास परिवर्तन देखने को नहीं मिला है। इस विषय को शोध के रूप में चुनने का सबसे बड़ा कारण यही है की सभी सुविधाओं और योजनाओं के होने के बाद भी स्थिति ज्यों की त्यों है।

इस शोध को नारीवादी दृष्टिकोण से किया गया है। शोध को सम्पन्न करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक विधि के अंतर्गत प्रत्यक्ष व्यक्तिगत साक्षात्कार, प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है,साथ

ही शोध से संबंधित पुस्तकें, रिपोर्ट और पत्रिकाओं का बारीकी से विश्लेषण किया गया।समय सीमा सीमित होने के कारण शोध क्षेत्र के रूप में छपरा शहर का चुनाव किया गया। जिसमें सिर्फ 10-15 प्राथमिक स्कूलों का सर्वेक्षण किया गया।

शोध सर्वेक्षण और विश्लेषण के बाद शोध को नया आयाम देने के लिए इसको पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है। पहला अध्याय शोध के परिचय से संबंधित है जिसमें शोध प्रविधियों का उल्लेख किया गया है। दूसरे अध्याय भारत में प्राथमिक शिक्षा और बालिकाओं से संबंधित है जिसमें बालिकाओं की शिक्षा के अधिकार, बालिका शिक्षा पर बहस और बालिका शिक्षा को प्रभावित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कारणों का अध्ययन किया गया है। तीसरे अध्याय बालिका शिक्षा और राज्य का हस्तक्षेप से संबंधित है जिसके अंतर्गत सर्व शिक्षा अभियान, बिहार शिक्षा परियोजना छपरा शहर में बालिका शिक्षा की स्थिति, उनका लिंगानुपात, शैक्षणिक स्थिति, छपरा शहर का परिचय तथा छपरा में बिहार शिक्षा परियोजना की स्थिति का मूल्यांकन किया गया है। चौथे अध्याय में बिहार शिक्षा परियोजना के अंतर्गत राष्ट्रीय स्तर पर बालिका शिक्षा योजना : एक परिचय का मूल्यांकन है इसके साथ ही यह देखा गया है कि इस योजना के आरंभ के बाद यह अपने लक्ष्य और कार्यों को पूरा करने में सफल हुई है या नहीं, तथा ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों में बालिकाओं के सामने आने वाली समस्याओं का उल्लेख किया गया है।

अंत में सभी अध्यायों का विश्लेषण किया गया। विश्लेषण के आधार पर यह देखने को मिलता है कि आज भी बिहार में बालिकाओं को प्राथमिक स्तर कि शिक्षा प्राप्त करने में कई तरह कि मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। माता-पिता की सोच है कि बालिकाएँ पढ़-लिख कर क्या करेंगी जब उन्हें शादी करके दूसरे के घर ही जाना है और यदि उन्हे पढ़ा-लिखा भी दिया जाए तो वह कमा कर हमें नहीं देंगी ऐसा उनका मानना है। बालकों को पढ़ाने से घर में कमाई का स्रोत बढ़ेगा। इस शोध के द्वारा सामाजिक मानसिकता को दर्शाया गया है। आज के आधुनिक समाज में भी लोगों की संकुचित मानसिकता है जिसकी शिकार बालिकाओं को होना पड़ता है।

अनुक्रमाणिका

प्रमाण-पत्र/घोषणा-पत्र
आभार-पत्र

अध्याय : एक **1-10**

1 भूमिका
1.1 साहित्यक पुनरावलोकन
1.2 शोध प्रश्न
1.3 शोध उद्देश
1.4 शोध परिकल्पना /उपकल्पन
1.5 शोध की प्रासंगिकता
1.6 शोध की प्राविधि
1.6.1 गुणात्मक शोध प्राविधि
1.6.2 परिमाणात्मक शोध प्राविधि
1.7 शोध क्षेत्र
1.8 शोध की समय सीमा

अध्याय :दो **11-41**

2 भारत में प्राथमिक शिक्षा और बालिकाएं
2.1 शिक्षा का अधिकार : बालक या बालिकाएं
2.2 बालिका शिक्षा पर बहस
2.3 बालिका शिक्षा को प्रभावित करने वाले सामाजिक-सांस्कृतिक कारक

अध्याय : तीन **42-70**

3 बालिका शिक्षा एवं राज्य का हस्तक्षेप
3.1 सर्व-शिक्षा अभियान : बिहार शिक्षा परियोजना
3.2 छपरा जिला : एक परिचय
3.3छपरा ज़िले में बिहार शिक्षा परियोजना की स्थिति
3.3.1 लिंगानुपात, शैक्षणिक स्तर

3.3.2 बालिका शिक्षा की स्थिति

अध्याय: चार 71-83

4 राष्ट्रीय स्तर पर बालिका शिक्षा योजना (NPEGEL): एक परिचय

4.1 योजना का प्रारंभ

4.2 कार्य योजना : आरंभ से अब तक

4.3 लक्ष्यपूर्ति

4.4 अवरोध , संभावनाएं एवं चुनौतियां

4.5 बालिकाओं का साक्षात्कार

अध्याय : पांच **84-89**

परिणाम/निष्कर्ष

संदर्भ सूची

परिशिष्ट:-

1 प्रश्नावली

2 छायाचित्र